(1)

B.A. (Hons) Part III
Philosophy. Paper V
Topic – Religious Consciousness.

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

धर्म की विशेषता यह है कि धर्म प्रगतिशील होता है इसलिए धर्म के परिवर्तनशील होने के कारण धर्म की परिभाषा मे भी परिवर्तन होता रहता है। धर्म की वही परिभाषा सफल हो सकती है जिसमें परिभाषित करनेवाला न सिर्फ अपने धर्म की विशेषताओं का उल्लेख करता है बल्कि सभी व्यक्तियों तथा समुदायों के धर्म संबंधि विशेषताओं का भी उल्लेख करता है। अतः धर्म की परिभाषा को वर्णनात्मक होना चाहिए। धार्मिक चेतना वह प्रक्रिया है जो उन तथ्यों की विवेचना करती है जिससे मानव का झुकाव धर्म की ओर होता है। शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित की चेतना को नैतिक चेतना कहते हैं। धार्मिक चेतना का अध्ययन धर्म-दर्शन मे होता है। आधुनिक मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मन के तीन पहलु हैं – क्रिया, भावना और इच्छा।

इसप्रकार हमलोग देखते है कि धार्मिक चेतना के तीन पहलू होते है। (1) ज्ञानात्मक पहलू (2) भावनात्मक पहलू (3) क्रियात्मक पहलू। ज्ञानात्मक पहलू धर्म का वह पहलू है जो मानव को किसी शक्ति के प्रति चेतनाशील बनाता है। भावनात्मक पहलू धर्म का वह पहलू है जो मानव को उस सत्ता के प्रति प्रेम, आत्मसमर्पण तथा निर्भयता का भाव उत्पन्न करता है। क्रियात्मक पहलू धर्म का वह पहलू है जो मानव को शक्ति के प्रति क्रियाशील बनाता है। धर्म के लिए तीनों पहलू अनिवार्य है। जिसप्रकार मन की व्याख्या विचार या भाव या इच्छा की उपेक्षा से पूर्ण नहीं समझी जा सकती है ठीक उसीप्रकार धर्म की व्याख्या भी ज्ञानात्मक पहलू या भावनात्मक पहलू या क्रियात्मक पहलू की उपेक्षा से असफल प्रतीत होगी क्योंकि धर्म सम्पूर्ण मानव मन की प्रतिक्रिया है। परन्तु कुछ विद्वानों ने कहा है कि धार्मिक चेतना केवल ज्ञानात्मक है, जबकि कुछ ने कहा है कि यह केवल भावात्मक है और कुछ ने कहा है कि यह केवल क्रियात्मक है परन्तु सच्चाई तो यह है कि धार्मिक चेतना ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक तीनों का संयोग है।